ठंडा गोश्त

ईशर सिंह जूँही होटल के कमरे में दाख़िल हुआ, कुलवंत कौर पलँग पर से उठी। अपनी तेज़-तेज़ आँखों से उसकी तरफ़ घूर के देखा और दरवाज़े की चटख़नी बंद कर दी। रात के बारह बज चुके थे, शहर का मुज़ाफ़ात[1] एक अजीब पुरअसरार ख़ामोशी में ग़र्क़ था।

कुलवंत कौर पलँग पर आलती-पालती मारकर बैठ गई। ईशर सिंह जो ग़ालिबन अपने परागंदा[2] ख़यालात के उलझे हुए धागे खोल रहा था, हाथ में किरपान लिए एक कोने में खड़ा था। चंद लम्हात इसी तरह ख़ामोशी में गुज़र गए। कुलवंत कौर को थोड़ी देर के बाद अपना आसन पसंद न आया, और वह दोनों टाँगें पलँग से नीचे लटकाकर हिलाने लगी। ईशर सिंह फिर भी कुछ न बोला।

कुलवंत कौर भरे-भरे हाथ-पैरोंवाली औरत थी। चौड़े-चकले कूल्हे थुल-थुल करनेवाले गोश्त से भरपूर, कुछ बहुत ही ज़्यादा ऊपर को उठा हुआ सीना, तेज़ आँखें, बालाई[3] होंठ पर बालों का सुर्मई ग़ुबार। ठोड़ी की साख़्त[4] से पता चलता था कि बड़े धड़ल्ले की औरत है।

ईशर सिंह सिर न्योढ़ाए एक कोने में चुपचाप खड़ा था। सिर पर उसकी कसकर बाँधी हुई पगड़ी ढीली हो रही थी। उसके हाथ जो किरपान थामे हुए थे, थोड़े-थोड़े लरज़ाँ थे मगर उसके क़दो-क़ामत और ख़द्दो-ख़ाल से पता चलता था कि वह कुलवंत कौर-जैसी औरत के लिए मौज़ूँतरीन[5] मर्द है।

चंद और लम्हात जब इसी तरह ख़ामोशी में गुज़र गए तो कुलवंत कौर छलक पड़ी लेकिन तेज़-तेज़ आँखों को नचाकर वह सिर्फ़ इस क़दर कह सकी: "ईशर सियाँ···"

ईशर सिंह ने गरदन उठाकर कुलवंत कौर की तरफ़ देखा, मगर उसकी निगाहों की गोलियों की ताब न लाकर मुँह दूसरी तरफ़ मोड़ लिया।

कुलवंत कौर चिल्लाई: "ईशर सियाँ···" लेकिन फ़ौरन ही आवाज़ भींच ली और पलँग पर से उठकर उसकी जानिब जाते हुए बोली: "कहाँ रहे तुम इतने दिन?"

ईशर सिंह ने ख़ुश्क होंठों पर ज़ुबान फेरी: "मुझे मालूम नहीं।"

कुलवंत कौर भिन्ना गई: "यह भी कोई माँया जवाब है!"

ईशर सिंह ने किरपान एक तरफ़ फेंक दी और पलँग पर लेट गया। ऐसा मालूम होता था कि वह कई दिनों का बीमार है। कुलवंत कौर ने पलँग की तरफ़ देखा जो अब ईशर सिंह

से लबालब भरा था। उसके दिल में हमदर्दी का जज़्बा पैदा हो गया। चुमांचे उसके माथे पर हाथ रखकर उसने बड़े प्यार से पूछा: "जानी, क्या हुआ है तुम्हें?"

ईशर सिंह छत की तरफ़ देख रहा था, उससे निगाहें हटाकर उसने कुलवंत कौर के मानूस[6] चेहरे को टटोलना शुरू किया: "कुलबंत!" उसकी आवाज़ में दर्द था।

कुलवंत कौर सारी सिमटकर अपने बालाई होंठ में आ गई: "हाँ जानी!" कहकर वह उसको दाँतों से काटने लगी।

ईशर सिंह ने पगड़ी उतार दी। कुलवंत कौर की तरफ़ सहारा लेनेवाली निगाहों से देखा, उसके गोश्त भरे कूल्हे पर ज़ोर से धप्पा मारा और सिर को झटका देकर अपने आपसे कहा: 'यह कुड़िया दिमाग़ ही ख़राब है···'

झटका देने से उसके केश खुल गए। कुलवंत कौर उँगलियों से उनमें कंघी करने लगी। ऐसा करते हुए उसने बड़े प्यार से पूछा: "ईशर सियाँ, कहाँ रहे तुम इतने दिन?"

"बुरे की माँ के घर···" ईशर सिंह ने कुलवंत कौर को घूर के देखा और दफ़्अतन[7] दोनों हाथों से उसके उभरे हुए सीने को मसलने लगा: "क़सम वाहगुरु की, बड़ी जानदार औरत हो!"

कुलवंत कौर ने एक अदा के साथ ईशर सिंह के हाथ एक तरफ़ झटक दिए और पूछा: "तुम्हें मेरी क़सम, बताओ, कहाँ रहे···? शहर गए थे···?"

ईशर सिंह ने एक ही लपेट में अपने बालों का जूड़ा बनाते हुए जवाब दिया: "नहीं।"

कुलवंत कौर चिढ़ गई: "नहीं, तुम ज़रूर शहर गए थे··· और तुमने बहुत-सा रुपया लूटा है जो तुम मुझसे छुपा रहे हो।"

"वह अपने बाप का तुख़्म[8] न हो जो तुमसे झूठ बोले···"

कुलवंत कौर थोड़ी देर के लिए ख़ामोश हो गई, लेकिन फ़ौरन ही भड़क उठी: "लेकिन मेरी समझ में नहीं आता, उस रात तुम्हें हुआ क्या···? अच्छे-भले मेरे साथ लेटे थे, मुझे तुमने वह तमाम गहने पहना रखे थे जो तुम शहर से लूट के लाए थे। मेरी झप्पियाँ ले रहे थे, पर जाने एकदम तुम्हें क्या हुआ, उठे और कपड़े पहनकर बाहर निकल गए···?"

ईशर सिंह का रंग ज़र्द हो गया। कुलवंत कौर ने यह तब्दीली देखते ही कहा: "देखा, कैसे रंग पीला पड़ गया··· ईशर सियाँ, क़सम वाहगुरु की, ज़रूर कुछ दाल में काला है?"

"तेरी जान की क़सम, कुछ भी नहीं।"

ईशर सिंह की आवाज़ बेजान थी। कुलवंत कौर का शुब्हा और ज़्यादा मज़बूत हो गया। बालाई होंठ भींचकर उसने एक-एक लफ़्ज़ पर ज़ोर देते हुए कहा: "ईशर सियाँ, क्या बात है, तुम वह नहीं हो जो आज से आठ रोज़ पहले थे?"

ईशर सिंह एकदम उठ बैठा, जैसे किसी ने उस पर हमला किया है। कुलवंत कौर को अपने तनोमंद[9] बाज़ुओं में समेटकर उसने पूरी क़ुव्वत के साथ उसे झँभोड़ना शुरू कर दिया: "जानी, मैं वही हूँ··· घुट-घुट पा जफ़ियाँ, तेरी निकले हड्डाँ दी गर्मी···"

कुलवंत कौर ने कोई मज़ाहमत[10] न की, लेकिन वह शिकायत करती रही: "तुम्हें उस रात हो क्या गया था?"

"बुरे की माँ का वह हो गया था।"

"बताओगे नहीं?"

"कोई बात हो तो बताऊँ!"

"मुझे अपने हाथों से जलाओ अगर झूठ बोलो।"

ईशर सिंह ने अपने बाज़ू उसकी गर्दन में डाल दिए और होंठ उसके होंठों में गाड़ दिए। मूँछों के बाल कुलवंत कौर के नथुनों में घुसे तो उसे छींक आ गई—दोनों हँसने लगे।

ईशर सिंह ने अपनी सदरी उतार दी और कुलवंत कौर को शहवत[11] भरी नज़रों से देखकर कहा: "आ जाओ, एक बाज़ी ताश की हो जाए!"

कुलवंत कौर के बालाई होंठ पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूँदें फूट आईं। एक अदा के साथ उसने अपनी आँखों की पुतलियाँ घुमाईं और कहा: "चल दफ़ान हो···"

ईशर सिंह ने उसके उभरे हुए कूल्हे पर ज़ोर की चुटकी भरी। कुलवंत कौर तड़पकर एक तरफ़ हट गई: "न कर ईशर सियाँ, मेरे दर्द होता है···"

ईशर सिंह ने आगे बढ़कर कुलबंत कौर का बालाई होंठ अपने दाँतों तले दबा लिया और किचकिचाने लगा। कुलबंत कौर बिलकुल पिघल गई। ईशर सिंह ने अपना कुरता उतार के फेंक दिया और कहा: "लो, फिर हो जाए तुरप चाल···"

कुलबंत कौर का बालाई होंठ कँपकँपाने लगा। इशर सिंह ने दोनों हाथों से कुलबंत कौर की कमीस का घेरा पकड़ा और जिस तरह बकरे की खाल उतारते हैं, उसी तरह उसको उतारकर एक तरफ़ रख दिया। फिर उसने घूर के उसके नंगे बदन को देखा और ज़ोर से उसके बाज़ू पर चुटकी भरते हुए कहा: "कुलवंत, क़सम वाहगुरु की, बड़ी करारी औरत है तू···"

कुलवंत कौर अपने बाज़ू पर उभरते हुए लाल धब्बे को देखने लगी: "बड़ा ज़ालिम है तू ईशर सियाँ!"

ईशर सिंह अपनी घनी काली मूँछों में मुस्कराया: "होने दे आज ज़ुल्म?" और यह कहकर उसने मज़ीद[12] ज़ुल्म ढाने शुरू किए··· कुलवंत कौर का बालाई होंठ दाँतों तले किचकिचाया, कान की लौओं को काटा, उभरे हुए सीने को भँभोड़ा, भरे हुए कूल्हों पर आवाज़ पैदा करनेवाले चाँटे मारे, गालों के मुँह भर-भर के बोसे लिए, चूस-चूसकर उसका सारा सीना थूकों से लथेड़ दिया··· कुलवंत कौर तेज़ आँच पर चढ़ी हुई हाँडी की तरह उबलने लगी, लेकिन ईशर सिंह इन तमाम हीलों के बावजूद ख़ुद में हरारत पैदा न कर सका। जितने गुर और जितने दाँव उसे याद थे, सब के-सब उसने पिट जानेवाले पहलवान की तरह इस्तेमाल कर दिए, पर कोई कारगर न हुआ। कुलवंत कौर ने, जिसके बदन के सारे तार तनकर ख़ुद-ब-ख़ुद बज रहे थे, ग़ैर ज़रूरी छेड़-छाड़ से तंग आकर कहा: "ईशर सियाँ, काफ़ी फेंट चुका है, अब पत्ता फेंक!"

यह सुनते ही ईशर सिंह के हाथ से जैसे ताश की सारी गड्डी नीचे फिसल गई। हाँफता हुआ वह कुलवंत कौर के पहलू में लेट गया और उसके माथे पर सर्द पसीने के लेप होने लगे। कुलवंत कौर ने उसे गर्माने की बहुत कोशिश की, मगर नाकाम रही। अब तक

सबकुछ मूँह के कहे बग़ैर होता रहा था, लेकिन जब कुलवंत कौर के मुंतज़िर-ब-अमल आज़ा[13] को सख़्त नाउम्मीदी हुई तो वह झल्लाकर पलँग से नीचे उतर गई। सामने खूँटी पर चादर पड़ी थी, उसको उतारकर उसने जल्दी-जल्दी ओढ़कर और नथुने फुलाकर, बिफरे हुए लहजे में कहा: "ईशर सियाँ, वह कौन हरामज़ादी है जिसके पास तू इतने दिन रहकर आया है, और जिसने तुझे निचोड़ डाला है?"

ईशर सिंह पलँग पर लेटा हाँफता रहा और उसने कोई जवाब न दिया।

कुलवंत कौर ग़ुस्से से उबलने लगी: "मैं पूछती हूँ, कौन है वह चड्डो··· कौन है वह अलिफती··· कौन है वह चोर पत्ता?"

ईशर सिंह ने थके हुए लहजे में जवाब दिया: "कोई भी नहीं कुलवंत, कोई भी नहीं···"

कुलवंत कौर ने अपने भरे हुए कूल्हों पर हाथ रखकर एक अज़्म[14] के साथ कहा: "ईशर सियाँ, मैं आज झूठ-सच जान के रहूँगी··· खा वाहगुरु जी की क़सम··· क्या इसकी तह में कोई औरत नहीं?"

ईशर सिंह ने कुछ कहना चाहा मगर कुलबंत कौर ने इसकी इजाज़त न दी: "क़सम खाने से पहले सोच ले कि मैं भी सरदार निहाल सिंह की बेटी हूँ··· तिक्का बोटी कर दूँगी, अगर तूने झूठ बोला··· ले अब खा वाहगुरु जी की क़सम··· क्या इसकी तह में कोई औरत नहीं···?"

ईशर सिंह ने बड़े दुख के साथ इस्बात[15] में सिर हिलाया। कुलबंत कौर बिलकुल दीवानी हो गई। उसने लपककर कोने में से किरपान उठाई, मियान को केले के छिलके की तरह उतारकर एक तरफ़ फेंका और ईशर सिंह पर वार कर दिया।

आन की आन में लहू के फ़व्वारे छूट पड़े। कुलवंत कौर की इससे भी तसल्ली न हुई तो उसने वहशी बिल्लियों की तरह ईशर सिंह के केश नोचने शुरू कर दिए। साथ ही साथ वह अपनी नामालूम सौत को मोटी-मोटी गालियाँ देती रही। ईशर सिंह ने थोड़ी देर के बाद नक़ाहत भरी इल्तिजा की: "जाने दे अब कुलवंत, जाने दे···" उसकी आवाज़ में बला का दर्द था। कुलवंत कौर पीछे हट गई।

ख़ून ईशर सिंह के गले से उड़-उड़कर उसकी मूँछों पर गिर रहा था। उसने अपने लरज़ाँ होंठ खोले और कुलवंत कौर की तरफ़ शुक्रिए और गिले की मिली-जुली निगाहों से देखा: "मेरी जान तुमने बहुत जल्दी की··· लेकिन जो हुआ, ठीक है···"

कुलवंत कौर का हसद फिर भड़का: "मगर वह कौन है तुम्हारी माँ?"

लहू ईशर सिंह की ज़ुबान तक पहुँच गया। जब उसने उसका ज़ाइक़ा चखा तो उसके बदन में झुरझुरी-सी दौड़ गई: "और मैं··· और मैं··· भैणया छः आदमियों को क़त्ल कर चुका हूँ··· इसी किरपान से···"

कुलवंत कौर के दिमाग़ में सिर्फ़ दूसरी औरत थी: "मैं पूछती हूँ, कौन है वह हरामज़ादी?"

ईशर सिंह की आँखें धुँधला रही थीं। एक हल्की-सी चमक उनमें पैदा हुई और उसने कुलबंत कौर से कहा: "गाली न दे उस भड़वी को···"

कुलवंत चिल्लाई : "मैं पूछती हूँ, वह है कौन ?"

ईशर सिंह के गले में आवाज़ रुँध गई : "बताता हूँ..." यह कहकर उसने अपनी गर्दन पर हाथ फेरा और उस पर अपना जीता-जीता ख़ून देखकर मुस्कराया : "इंसान माँया भी एक अजीब चीज़ है..."

कुलवंत कौर उसके जवाब की मुंतज़िर थी : "ईशर सियाँ, तू मतलब की बात कर..."

ईशर सिंह की मुस्कराहट उसकी भरी मूँछों में और ज़्यादा फैल गई : "मतलब ही की बात कर रहा हूँ। गला चिरा है माँया मेरा... अब धीरे-धीरे ही सारी बात बताऊँगा..."

और जब वह बात बताने लगा तो उसके माथे पर ठंडे पसीने के लेप होने लगे : "कुलवंत मेरी जान ! मैं तुम्हें नहीं बता सकता, मेरे साथ क्या हुआ...? इंसान कुड़ीया भी एक अजीब चीज़ है... शहर में लूट मची तो सबकी तरह मैंने भी उसमें हिस्सा लिया... गहने-पाते और रुपए-पैसे जो भी हाथ लगे, वह मैंने तुम्हें दे दिए... लेकिन एक बात तुम्हें न बताई..."

ईशर सिंह ने घाव में दर्द महसूस किया और कराहने लगा। कुलवंत कौर ने उसकी तरफ़ तवज्जोह न दी और बड़ी बेरहमी से पूछा : "कौन-सी बात ?"

ईशर सिंह ने मूँछों पर जमते हुए लहू को फूँक के ज़रिए से उड़ाते हुए कहा : "जिस मकान पर... मैंने धावा बोला था... उसमें सात... उसमें सात आदमी थे... छः मैंने... कत्ल कर दिए... इसी किरपान से जिससे तूने मुझे... छोड़ इसे... सुन... एक लड़की थी बहुत ही सुंदर... उसको उठाकर मैं अपने साथ ले आया..."

कुलवंत कौर ख़ामोश सुनती रही। ईशर सिंह ने एक बार फिर फूँक मारके मूँछों पर से लहू उड़ाया : "कुलवंत जानी, मैं तुमसे क्या कहूँ, कितनी सुंदर थी... मैं उसे भी मार डालता, पर मैंने कहा, नहीं ईशर सियाँ, कुलवंत कौर के तो हर रोज़ मजे लेता है, यह मेवा भी चख देख..."

कुलवंत कौर ने सिर्फ़ इस क़दर कहा : "हूँ..."

"...और मैं उसे कंधे पर डालकर चल दिया... रास्ते में... क्या कह रहा था मैं...? हाँ रास्ते में... नहर की पटरी के पास थोहर की झाड़ियों तले मैंने उसे लिटा दिया... पहले सोचा कि फेंटूँ, लेकिन फिर ख़याल आया कि नहीं..." यह कहते-कहते ईशर सिंह की ज़ुबान सूख गई।

कुलवंत कौर ने थूक निगलकर अपना हलक़ तर किया और पूछा : "फिर क्या हुआ ?"

ईशर सिंह के हलक़ से बमुश्किल यह अल्फ़ाज़ निकले : "मैंने... मैंने पत्ता फेंका... लेकिन... लेकिन..." उसकी आवाज़ डूब गई।

कुलवंत कौर ने उसे झँझोड़ा : "फिर क्या हुआ ?"

ईशर सिंह ने अपनी बंद होती हुई आँखें खोलीं और कुलवंत कौर के जिस्म की तरफ़ देखा, जिसकी बोटी-बोटी थिरक रही थी : "वह... वह मरी हुई थी... लाश थी... बिलकुल ठंडा गोश्त... जानी, मुझे अपना हाथ दे..."

कुलवंत कौर ने अपना हाथ ईशर सिंह के हाथ पर रखा, जो बर्फ़ से भी ज़्यादा ठंडा था।

1. आस-पास का क्षेत्र; 2. अस्त-व्यस्त, परेशान; 3. ऊपर का; 4. बनावट; 5. बहुत सही; 6. जाना-पहचाना; 7. अचानक; 8. बीज; 9. बलिष्ठ; 10. विरोध; 11. कामुक; 12. और अधिक; 13. प्रतीक्षारत अंगों; 14. दृढ निश्चय; 15. स्वीकारोक्ति।